''ख़ुदा तुम लोगों की ज़िन्दगी आसान करना चाहता है।''

(सूर–ए–निसा)

इस्लाम में शादी के ऊँचे मक़सद

हुज्जतुल इस्लाम प्रो0 हुसैन अन्सारियान
अनुवादक : मु0 र0 आबिद

(पिछले शुमारे से आगे)

पाक घर

शादी के बग़ैर किसी जवान लड़की–लड़के का पाक चलन रहना मुम्किन मालूम नहीं होता। लाखों करोड़ों में जो गुनाहों से बचा हुआ पाक चलन वाला हो किसी एक बिन बियाहे या बिन बियाही का ढूँढना बहुत कठिन है। ऐसा कोई अल्लाह के औलिया (पहुँचे हुए, दोस्त, बड़ों अल्लाह वालों) में ही होगा। शादी के बिना गुनाहों, गन्दिगियों, अकड़, घमण्ड से बचे रहना हज़रत यूसुफ (अ0) का ही काम है। जिसके अन्दर सेक्स ज़िन्दा है और सेक्स का दबाव कड़ा है वह बुराई से बचा रह नहीं सकता।

यह शादी वह ख़ुदाई और प्राकृतिक (कुदरती) सच्चाई है जो बहुत सी कठिनाइयों को आसान करती है और जवानों की पाकी, तक़वा और बेदाग़ चलन के बाक़ी रखने की वजह होती है। समाज में वही घर सलामत रह सकता है जिसमें मर्द–औरत शादी के तक़ाज़ों (माँगों) को पूरा करते हैं और एक–दूसरे के हक़ का लिहाज़ करते हैं। मुसलमान के घर को चाहे वह जिस देश में हो, सदा ख़ुदा की याद और तस्बीह में रचा–बसा होना चाहिए और शरियत की चमक से जगमगाता रहना चाहिए। इस तरह उठान और ऊँचाई का नमूना होना चाहिएः

'जिन घरों को ऊँचा रखने का ख़ुदा ने हुक्म दिया है और यह कि उनमें उसका नाम लिया जाय और घरों में सुब्ह शाम उसकी तस्बीह की जाय।'

ऐसा घर मोमिन का घर है जिसमें ख़ुदा की इबादत से और उसके कहे पर चलने से रौनक़ है, उसके हुक्म से शादी हुई है और उसमें ज़िन्दगी बिताने वाले औरत मर्द एक–दूसरे के हक़ को पूरा करते रहते हैं। कुर्आन मजीद शादी करने का हुक्म इसलिए देता है कि इस सुन्नत से मर्द औरत की कठिनाइयाँ कम हो जाएँ और दोनों के दामन, जो रहमत के और पालने के दमान हैं, वे गन्दगियों और ख़राबियों से बचे रहें, मर्द–औरत एक रिश्ते में बंध जाने के बाद घर को ख़ुदा की याद की जगह बना दे और उसकी तस्बीह करे। ऐसे ही घर के माहौल में मर्द औरत ख़ुदा के सच्चे बन्दे (दास) और उनके बच्चे अच्छाईयों के नमूने और उनका चाल–चलन ख़ुदाई अदब–तमीज़ (शिष्टाचार) और नबियों की सुन्नत (सदावृत्ति) का जलवा है।

जब मोमिन औरत–मर्द शादी करते हैं और उनमें हरेक ख़ुदा के हुक्मों, आदेशों का लिहाज़ करने का ख़ुद को ज़िम्मेवार समझता है,

दोनों एक दूसरे की मदद करने वाले साथी, दोस्त चाहने वाले, मेहरबान हमदर्द राज़ रखने वाले, प्यार मुहब्बत करने वाले के तरीक़े से ज़िन्दगी बिताते हैं तो वे कठिनाइयों से बचे रहते हैं। जब कोई मुश्किल सामने आती है तो मिलकर आसानी से दूर करने का रास्ता ढूँढ निकालते हैं और सब्र, सहन और हिम्मत से कठिनाइयाँ दूर करने को उठ खड़े होते हैं।

सबसे बुरे

अलग–थलग रहना, अकेलापन और शादी से कतराना बहुत सी परेशानियाँ, उदासी, मुरझाहट और मन की बेचैनियों का कारण है। इससे बहुत सी शारीरिक (जिस्मानी) और मानसिक (Psycho) बीमारियाँ पैदा होती हैं। अकेलापन आदमी को तरह–तरह के ख़याल, वहम, बेकार की सोच में और आचरण (चाल–चलन) व मनोवैज्ञानिक (Psychological) बीमारियों में डुबा देता है और आदमी के लिए कठिनाइयाँ खड़ी कर देता है। रसूल (स0) फरमाते हैः

'जहन्नमियों में ज़्यादा वे लोग होंगे जिन्होंने शादी न की होगी।'

आप (स0) का ही कहना हैः 'तुम्हारे मुर्दों में सबसे बुरे बे बियाहे हैं।'

एक रिवायत में आप (स0) की सूक्ति हैः 'तुम्हारे मुर्दों में सबसे नीच बे बियाहे हैं।'

आप (स0) का ही सूझ–बूझ वाला कथन हैः 'तुम में सबसे ज़्यादा बुरे (शरीर, दुष्ट) बेबियाहे लोग हैं। बेबियाहे शैतान के भाई हैं।'

प्यारे रसूल (स0) का कहना हैः मेरी उम्मत (गिरोह, समुदाय, अनुयायी समाज) के बेहतरीन (सबसे अच्छे, उत्तम) बियाहे लोग हैं और सबसे बुरे ख़राब लोग बिन बियाहे लोग हैं।

यह भी फरमायाः 'जो लोग शादी किये बिन मर गये उन्हें दुनिया में लौटा दिया जाए तो वह ज़रूर बियाह करेंगें।'

एक और पाक हदीस (रसूल–वाणी) हैः 'ख़ुदा उस पर लानत धिक्कार करता है जो शादी से कतराता है।'

बियाह न करने वालों को रसूल (स0) ने इसलिए जहन्नमी, सबसे बुरे, दुष्ट, शरीर, शैतान के भाई और धिक्कारी बताया है क्योंकि ये लोग ज़रूर ख़राबी, उथल–पुथल, शैतानी और गुनाह पाप करेंगे और घर व समाज के लिए कठिनाइयाँ पैदा करेंगे और इनकी वजह से ज़िन्दगी के लिए बहुत सी परेशानियाँ खड़ी हो जायेंगी।

क़ुर्आनी आयतों और रिवायतों के पढ़ने और तजुर्बे (अनुभव) से यह साबित होता है कि शादी से इन्सान को बड़ाई, ऊँचाई मिलती है और उन चीज़ों से छुटकारा मिलता है जो ख़ुदा के अज़ाब (दण्ड) की वजह होती हैं, शादी गिरावट व नीच से और शैतान के चंगुल से बचाती है आदमी को बुराई, ख़राबी का सोता बनने नहीं देती, उसे ख़ुदा की लानत का पात्र बनने से बचाती है। ये चीज़ें चैन आराम, पाकी, तक़वा और ज़िन्दगी की मुश्किलों को आसान करती है। जब यही वजह है कि क़ुर्आन मजीद में शादी की यह वजह बतायी गई हैः

''ख़ुदा तुम लोगों के लिए ज़िन्दगी को आसान करना चाहत है।''

(सूर–ए–निसा आयत–28)

(जारी)